# अव्यक्त इशारे
# श्रेष्ठ स्वमानधारी, सम्मानदाता बनो

1) स्वयं को श्रेष्ठ स्वमानधारी आत्मा समझ स्वमान में स्थित रहो तो स्वमान, देहभान को भुला देगा। आधा-कल्प देह-भान में रहे और देह-भान के कारण अल्पकाल के मान प्राप्त करने के भिखारी रहे। अभी बाप ने आकर स्वमानधारी बना दिया। तो उसी स्वमान में सदा स्थित रहो, यह स्वमान सर्व इच्छाओं को सहज ही सम्पन्न कर देगा।

2) स्वमानधारी सदा बेफिक्र बादशाह होते हैं, सर्व प्राप्ति-स्वरूप होते हैं। उसे अप्राप्ति की अविद्या होती है। स्वमानधारी सदा बाप के दिलतख्त-नशीन होते हैं क्योंकि बेफिक्र बादशाह हैं। किसी भी प्रकार की उन्हें फिकर हो नहीं सकती।

3) जैसे बाप सदा स्वमान में स्थित है इसी प्रकार समान आत्मायें भी स्वमान में रहेंगी, नीचे नहीं आयेंगी। हर कदम स्वमान का होगा। ऐसा स्वमानधारी बाप-समान है। स्वमान ही उनका सिंहासन होगा। भविष्य सिंहासन के पहले स्वमान के सिंहासन पर सदा कायम रहो, सिंहासन से कभी नीचे नहीं आना।

4) यदि कोई पुरुषार्थी अपनी कमज़ोरी से या अलबेलेपन के कारण नीचे गिर जाता है अर्थात् अपनी स्टेज से नीचे आ जाता है तो भी आप स्वमानधारी पुण्य आत्मा का काम है - गिरे हुए को उठाना, सहयोगी बनाना। स्वमानधारियों के संकल्प में भी यह नहीं आ सकता कि ये तो अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं, करेंगे तो जरूर पायेंगे। यह भी रोब अथवा अहंकार का अंश है जो स्वमानधारी आत्मा में नहीं हो सकता।

5) जैसे आजकल दुनिया में भी मान से स्वमान मिलता है, कोई प्रेजीडेन्ट है तो उनका मान बड़ा होने के कारण सम्मान भी ऐसा मिलता है। ऐसे आप बच्चे भी स्वमान से ही विश्व का महाराजन बनेंगे और इस स्वमान के कारण विश्व सम्मान देगी। तो सिर्फ अपने स्वमान में स्थित रहो तो सर्व प्राप्तियां हो जायेंगी।

6) कोई छोटा है या बड़ा, महारथी है या प्यादा.. सर्व को सत्कार (सम्मान) की नज़र से देखो। सत्कार न देने वाले को भी सत्कार दो, ठुकराने वाले को भी ठिकाना दो, ग्लानि करने वाले के भी गुणगान करने वाले बनो, तब कहेंगे सर्व के सत्कारी। ऐसे सत्कार देने वाले सर्व का सम्मान प्राप्त करते हैं।

7) मन-वचन-कर्म तीनों में ध्यान रखो कि एक तो सदा स्वमान में रहना है। दूसरा - हर कदम बाप के फ़रमान पर चलना है। तीसरा - सर्व के सम्पर्क में आने में सम्मान देना है। लेकिन ऐसे सम्मान दाता वही बनते हैं जो सदा निर्मान रहते हैं। मान लेने की इच्छा से परे होने के कारण, वे सर्व द्वारा श्रेष्ठ मान मिलने का पात्र बन जाते हैं - यह आनादि नियम है।

8) सदा अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित हो, निर्मान बन, सबको सम्मान दो तो यह देना ही लेना

बन जायेगा। सम्मान देना अर्थात् उस आत्मा को उमंग-उल्हास में लाकर आगे करना। तो सदा स्वमान में रहो और सबको सम्मान देते चलो।

9) जैसे कोई बड़ा ऑफिसर वा राजा जब स्वमान की सीट पर स्थित होता है तो दूसरे भी उसे सम्मान देते हैं। अगर स्वयं सीट पर नहीं हैं तो उसका ऑर्डर कोई नहीं मानते। ऐसे ही जब तक आप अपने स्वमान की सीट पर नहीं तो माया भी आपके आगे सरेन्डर नहीं हो सकती क्योंकि वह जानती है कि यह सीट पर सेट नहीं है। सीट पर सेट होना अर्थात् स्वयं को मास्टर सर्वशक्तिवान समझना।

10) अपने रिकार्ड को ठीक रखने के लिए सर्व को रिगार्ड दो। जितना जो सर्व को रिगार्ड देता है उतना ही अपना रिकार्ड ठीक रख सकता है। दूसरे का रिगार्ड रखना अपना रिकार्ड बनाना है। जैसे यज्ञ के मददगार बनना ही मदद लेना है वैसे रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है।

11) जो बच्चे इस एक जन्म में स्वमानधारी होकर रहते हैं उनका सारा ही कल्प सम्मान होता है। उन्हें अपने राज्य में भी राज्य-अधिकारी बनने के कारण प्रजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता है और आधा कल्प भक्तों द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। इस समय स्वयं बाप ने आप बच्चों को स्वमान दिया है इसलिए अविनाशी सम्मान के अधिकारी बने हो। स्वमान और सम्मान - दोनों का आपस में सम्बन्ध है।

12) जब भी कोई शक्ति को आर्डर करते हो तो पहले देखो कि स्मृति की सीट पर, स्वमान की सीट पर स्थित हूँ! "मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ" इस स्मृति की सीट पर स्थित हो जाओ तो सर्व शक्तियां आपके पास समय पर आने के लिए बंधी हुई हैं, इतने पावरफुल स्वमानधारी बनकर रहो।

13) जैसे बाप सदा स्वमान में स्थित है, इसी प्रकार समान आत्मायें भी स्वमान में होंगी, उनके स्वमान को देखकर सबके मुख से निकलेगा कि यह तो स्वमानधारी बाप-समान है। वे भविष्य सिंहासन के पहले स्वमान के सिंहासन पर कायम रहते हैं।

14) स्वमानधारी पुण्य आत्मा, रहमदिल दाता होने कारण - गिरे हुए को ऊंचा उठायेंगे। 'क्यों गिरा', 'गिरना ही चाहिए', 'कर्मो का फल भोग रहे हैं', 'करेंगे तो जरूर पायेंगे', स्वमानधारियों के संकल्प वा बोल इस प्रकार के नहीं हो सकते। उनमें रोब का अंश भी नहीं होगा। स्वमानधारी को देह-अभिमान कभी आ नहीं सकता।

15) इस एक जन्म के स्वमानधारी, सारा कल्प सम्मानधारी बन जाते हैं। उन्हें अपने राज्य में प्रजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता है और आधाकल्प भक्तों द्वारा सम्मान प्राप्त होता है और इस लास्ट जन्म में भक्तों द्वारा देव आत्मा वा शक्ति रूप का सम्मान देखते वा सुनते हैं। कितना सिक व प्रेम से अभी भी सब सम्मान दे रहे हैं!

16) सर्व आत्माओं के वृक्ष का तना आप ब्राह्मण हो। यह सारी शाखायें अर्थात् भिन्न-भिन्न

धर्म की आत्मायें भी मूल तना से निकली हैं। तो सभी अपने हुए ना! ऐसे स्वमानधारी सदा अपने को मास्टर रचयिता समझ, अपने को आदि देव ब्रह्मा के आदि रत्न आदि पार्टधारी आत्मायें समझ सबको सम्मान दो, अपने ऊंचे स्वमान में रहो।

17) जो अपने स्वमान में रहता है उसे हद का मान प्राप्त करने की कभी इच्छा नहीं होती, वे इच्छा मात्रम् अविद्या हो जाते हैं। एक स्वमान में सर्व हद की इच्छायें समा जाती हैं, मांगने की आवश्यकता नहीं रहती।

18) स्वमानधारी सदा बेफिक्र बादशाह होता है, सर्व प्राप्ति स्वरूप होता है। उसे अप्राप्ति की अविद्या होती है। तो सदा स्वमानधारी आत्मा हूँ - यह याद रखो। स्वमानधारी सदा बाप के दिल तख्तनशीन होता है क्योंकि बेफिक्र बादशाह है! दुनिया वालों के जीवन में कितनी फिक्र रहती हैं - उठेंगे तो भी फिक्र, सोयेंगे तो भी फिक्र और आप सदा बेफिक्र हो।

19) बापदादा आप बच्चों के स्वमान को देख सदा यही कहते वाह श्रेष्ठ स्वमानधारी, स्वराज्यधारी बच्चे वाह! हर एक बच्चे की विशेषता बाप को हर एक के मस्तक में चमकती हुई दिखाई देती है। आप भी अपनी विशेषता को जान, पहचान उसे विश्व सेवा में लगाते चलो। चेक करो - मैं प्रभु पसन्द, परिवार पसन्द कहाँ तक बना हूँ?

20) बापदादा द्वारा प्राप्त श्रेष्ठ आत्मा का स्वमान सदा स्मृति में रहे कि मैं साधारण आत्मा नहीं, परमात्म स्वमानधारी आत्मा हूँ। तो यह स्वमान हर संकल्प में, हर कर्म में सफलता अवश्य दिलायेगा। यह स्वमान, अभिमान को खत्म कर देता है क्योंकि स्वमान है श्रेष्ठ अभिमान। तो श्रेष्ठ अभिमान भिन्न-भिन्न अशुद्ध देह-अभिमान को समाप्त कर देता है।

21) स्वमानधारी आत्मा स्वत: ही सम्मान देने वाला सबके दिल में माननीय बन जाता है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - आदि देव होते हुए, ड्रामा की फर्स्ट आत्मा होते हुए सदा बच्चों को सम्मान दिया। अपने से भी ज्यादा बच्चों का मान आत्माओं द्वारा दिलाया इसलिए हर एक बच्चे के दिल में ब्रह्मा बाप माननीय बनें। तो सम्मान देना अर्थात् दूसरे के दिल में दिल के स्नेह का बीज बोना।

22) बापदादा के पास जो भी बच्चा जैसा भी आया, कमजोर आया, संस्कार के वश आया, पापों का बोझ लेके आया, कड़े संस्कार लेकर आया, बापदादा ने हर बच्चे को किस नज़र से देखा! मेरा सिकीलधा लाडला बच्चा है, ईश्वरीय परिवार का बच्चा है। तो सम्मान दिया और आप स्वमानधारी बन गये। ऐसे फॉलो फादर।

23) अगर सहज सर्वगुण सम्पन्न बनना चाहते हो तो अपने स्वमान में रहो और सबको सम्मान दो। जैसे बाप ने बच्चों को अपने से भी ऊंचा स्वमान दिया है। हर एक बच्चे को पांव में गिरने से छुड़ाए सिर का ताज बनाया है। स्वयं को सदा ही प्यारे बच्चों का सेवाधारी कहलाया है। इतनी बड़ी अथॉरिटी का स्वमान बच्चों को दिया। तो जितना स्वमानधारी

उतना ही निर्मान, सर्व के स्नेही बनो।

24) स्वमानधारी बच्चे हर आत्मा को ऐसे स्वमान से सिर्फ देखेंगे नहीं लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगे, क्योंकि स्वमान देह-अभिमान को मिटाने वाला है। जहाँ स्वमान होगा वहाँ देह का अभिमान नहीं होगा। देह- अभिमान को मिटाने का सहज साधन है सदा स्वमान में रहना।

25) स्वमानधारी आत्मा की दृष्टि, वृत्ति, कृत्ति में हर एक की विशेषता समाई हुई होती है। जो भी बाप का बना वह विशेष आत्म है, चाहे नम्बरवार है लेकिन दुनिया के कोटों में कोई है। ऐसे अपने को विशेष आत्मा समझ स्वमान में स्थित रहो।

26) बापदादा वर्तमान समय के प्रमाण हर बच्चे को एकाग्रता के रूप में स्वमानधारी स्वरूप में सदा देखने चाहते हैं। सबसे पहला स्वमान है - जिस बाप को याद करते रहे, उनके डायरेक्ट बच्चे बने हो, नम्बरवन सन्तान हो। बापदादा ने आप कोटों में से कोई बच्चों को कहाँ-कहाँ से चुनकर अपना बना लिया। 5 ही खण्डों से चुनकर डायरेक्ट बाप ने अपना बना लिया, तो इसी स्वमान में सदा रहो।

27) बापदादा ने अपने साथ-साथ बच्चों को भी सारे विश्व की आत्माओं को पहली रचना सर्व का पूर्वज बनाया है। आप विश्व के पूर्वज हो, पूज्य हो। सारे सृष्टि के वृक्ष की जड़ में आधारमूर्त हो। बापदादा ने अपने हर बच्चे को विश्व का आधारमूर्त, उदाहरणमूर्त बनाया है । सदा इसी रूहानी फखुर में रह बेफिक्र बादशाह होकर रहो | यही संकल्प रहे कि जो हो रहा है वह बहुत अच्छा और जो होने वाला है वह और ही अच्छे ते अच्छा। सभी फिकरातों का बोझ बापदादा को अर्पण कर डबल लाइट के ताजधारी बनो।

28) सम्मान देने वाले निंदक को भी अपना मित्र समझते हैं। सिर्फ सम्मान देने वाले को अपना नहीं समझते लेकिन गाली देने वाले को भी अपना समझते क्योंकि सारी दुनिया ही अपना परिवार है। सर्व आत्माओं का तना आप ब्राह्मण हो। यह सारी शाखाएं अर्थात् भिन्न-भिन्न धर्म की आत्माएं भी मूल तना से निकली हैं। तो सभी अपने हैं, ऐसे अपने पन का सम्मान दो।

29) सदा स्वयं मास्टर रचयिता के स्वमानधारी बन सर्व के प्रति सम्मान-दाता बनो। सदा अपने को आदि देव ब्रह्मा के आदि रत्न आदि पार्टधारी आत्मा समझो। जैसे ब्रह्मा बाप ने छोटे, बड़े, युवा, समान हमजिन्स सबको एक समान सम्मान दिया। ऐसे फालो फादर करो।

30) "मैं परम पवित्र आत्मा हूँ" इस श्रेष्ठ स्वमान के आसन पर स्थित होकर हर कर्म करो तो सहज वरदानी बन जायेंगे। स्मृति में रहना ही सीट वा आसन है। तो सदा स्मृति रहे कि मैं हर कदम में पुण्य करने वाली पुण्य आत्मा, महान संकल्प, महान बोल, महान कर्म करने वाली महान आत्मा हूँ। जब इस आसन पर विराजमान होंगे तो कभी भी माया समीप आ नहीं सकती।